International Journal of Research in IT and Management (IJRIM)
Available online at:http://euroasiapub.org
Vol. 7, Issue 12, December – 2017,
ISSN (o): 2231–4334 | ISSN(p): 2349-6517 | Impact Factor: 6.505| Thomson Reuters Researcher ID: L–5236–2015

स्वात्न्त्रय पूर्व काल तथा स्वातन्त्रयोतर काल में दलित–साहित्य

(सोनिया देवी)
एम फिल शोधकर्ता, भगवंत विश्वविधालय अजमेर राजस्थान

दलित शब्द को डॉ. अम्बेडकर ने अंग्रेजी के क्मचतमेमक का हिन्दी अनुवाद माना है। जिनमें–शोषित, उपेक्षित, दबे–कुचले और दमन के शिकार व्यक्ति अथवा वर्ग शामिल है।

ओमप्रकाश बाल्मीकि के अनुसार–

दलित शब्द का अर्थ है–''जिसका दलन और दमन हुआ है, दबाया गया है, उत्पीड़न, शोषित, सताया हुआ, उपेक्षित, वंचित आदि।''

डॉ. श्योराज सिंह बेचैन के अनुसार–

''दलित वह है जिसे भारतीय संविधान ने अनुसूचित जाति का दर्जा दिया है।''

यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि भारत में कई विदेशी भाषाओं व संस्कृतियों का समय–समय पर मिश्रण होता रहा है। जिस समय भारत में अंग्रेजों का शासन या राज था उस समय भारतीय जन जीवन में अनेक समस्याएँ के फलस्वरूप जो सुधारवादी आन्दोलन चले उनका प्रभाव उनके उपन्यासों में दिखाई देता है। इस समय प्रेमचन्द जी ने अनेक उपन्यासों की रचना की।

डॉ. रामरतन भटनाकर के अनुसार–

''प्रेमचन्द–युग में हिन्दी उपन्यास ने पहली बार सामाजिक जीवन के अनेक पहलुओं से अपना सम्बन्ध जोड़ा।''

जनता को समझने वाले, जनता के प्रति वास्तविक सहानुभूति रखने वाले, जनजीवन को अपना जीवन समझने वाले, जनहित के लिए आत्माहुति देने वाले भारत के राजनीतिक क्षेत्र में एक गाँधी जी हुए और हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में एक प्रेमचन्द हुए।

प्रेमचन्द की यथार्थ दृष्टि नागरिक जीवन और ग्रामीण जीवन दोनों क्षेत्रों में पहुँची है। प्रेमचन्द ने ''सेवासदन'' में वेश्या–समस्या को लिया है। इसमें सामाजिक कुरीतयों के शिंकजे में जकड़े हुए मध्यवर्गीय परिवार की दयनीय दशा का चित्रण है जिसमें दहेज की कुप्रथा के कारण सुमन का जीवन दयनीय बन जाता है।

''निर्मला'' में नारी जीवन का कारूणिक अंकन है तथा बेमेल विवाह दहेज प्रथा आदि सामाजिक कुप्रथाओं का चित्रण है।

''प्रेमाश्रम'' में सामन्ती व्यवस्था से पीड़ित किसानों का चित्रण है। ''गोदान'' में शोषित कृषक के ऋण की समस्या है। स्वतन्त्रता पूर्व लिखित उपन्यासों में प्रेमचन्द के उपन्यासों में हमें समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि के दर्शन होते हैं।

डॉ. रामविलास शर्मा के अनुसार–

''गोदान की मूल समस्या शोषित तथा उत्पीड़ित कृषक के ऋण की समस्या है।''

''निराला'' जी ने अपने उपन्यास ''अलका'' तथा ''निरूपमा'' में गाँवों के जमीदार तथा पढ़े–लिखें लोगों की बेरोजगारी का चित्रण किया है। यह एक ऐसी सामाजिक समस्या है जिसमें पढ़े–लिखे कुलीन युवक यदि निम्न जाति वालों के साथ कार्य करते हैं तो समाज उन्हें भी हीन दृष्टि से देखने लगता है।

प्रेमचन्द हिन्दी साहित्य जगत में एक ऐसे महान् कलाकार सिद्ध हुए हैं जिन्होंने कालजयो रचनाएँ देकर साहित्य की गरिमा बढ़ाई।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद जन्म धारण करने वाली युवा पीढ़ी ने अपने चारों ओर भ्रष्टाचार चोरबाजारी, मंहगाई, अंधकारपूर्ण जीवन की सुख–सुविधाओं का अभाव, क्षेत्रवाद, जीवन के अभाव आदि को उन्होंने सुरमा के मुँह की तरह खुला देखा। उसने जीवन का खण्डित रूप देखा और उससे विद्रोह करने की ठान ली। उसके सामने स्वतन्त्रता का भ्रष्ट रूप आया। जीवन के श्रेष्ठ और उच्च मूल्यों को उसने घर में और घर के बाहर सार्वजनिक जीवन में ध्वस्त होता देखा।

शिक्षा और यातायात की सुविधाओं के कारण विभिन्न प्रान्तों के विभिन्न प्रान्तों के विभिन्न देशों के लोग निकट आए। इन्हीं के आपसी विचारों के आदान–प्रदान से लोगों का जीवन के प्रति दृष्टिकोण भी व्यापक बनने लगा। और समाज में जातीयमता कम होने लगी। अब व्यक्ति का महत्त्व केवल परिवार या जातिसे नही, बल्कि उसकी स्थिति से निर्धाकरित किया जामता है। आजकल विवाह भी बराबर

स्टेटस वाले से करना पसंद किया जाता है, न कि जाति के व्यक्ति से जो बराबरी का न हो।

अमृत लाल नागर का मत है कि ''अन्तर्जातीय विवाह अधिकतर सफल होते हैं, उनमें से अधिकांश सुखी और आबंरूदार तजीवन व्यतीत करते हैं।''

आज जाल–बिरादरी का व्यक्ति तथा परिवार पर कठोर नियंत्रण समाप्त हो रहा है। भारत में आज जन्म के आधार पर व्यक्ति की सामाजिक परिस्थिति का निर्णय अधिक महत्त्वपूर्ण नहीं रहा गया है।

संदर्भ–सूची–

1. ओमप्रकाश–वाल्मीकि– ''दलित साहित्य का सौंदर्य शास्त्र।''
2. डॉ. श्योराज सिंह बेचैन– ''युद्धरत आम आदमी'' (अंक 41–42) पृ. सं.–14
3. डॉ. रामविलास शर्मा– ''प्रेमचन्द और उनका युद्ध''पृ.सं. 114
4. अमृतलाल नागर– ''अमृत और विष'' पृ.सं. 174